Vol 3 Issue 10 Nov 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-10, Nov-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

आत्मा की तलाश के लिए कबीर वाणी

सुनीता बामल
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

सारांश : सांसारिक कष्टों से पीड़ित जनता के दुःखों का निवारण करने के लिए, उनका उद्धार करने के लिए समय–समय पर ज्योतिपुत्रों का अवतरण इस नश्वर जगत की विशेष विभूति रहा है। ऐसी ही महत–विभूतियों में एक दैदीप्यमान ज्वाला कबीरदास जी के रूप में उदित हुई। निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक संत कबीरदास जी मध्यकालीन भारतीय साहित्य की धड़कन माने जाते हैं, उनका नाम सुनते ही हृदय आदोलित हो उठता है। वे उत्तरी भारत के भक्ति आंदोलन के अग्रणी संतों में से एक हैं। कबीर का युग अव्यवस्था और अराजकता का युग था। ऐतिहासिक दृष्टि से यदि उस युग का अवलोकन किया जाए तो सुस्पष्ट होता है कि वह धर्म, दर्शन, नैतिकता और शासन सभी अंगों मे विकलांग हो रहा था। कबीरदास क्रान्तिदर्शी थे। उनकी मर्मस्पर्शी दृष्टि से कोई भी वस्तु बच न सकी। घास की पत्ती से लेकर कल्पवृक्ष तक और रंक से लेकर राजा तक सभी का उन्होंने यथावत् अवगाहन किया और तत्पश्चात उनकी स्थिति और महता को आंकने और सुधारने का प्रयास किया।

प्रस्तावना :

वस्तुतः कबीर द्रष्टा भी थे और स्रष्टा भी। उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से जीवन, जगत और अध्यात्म के जिन रहस्यों का उद्घाटन किया, उनका यथेष्ट अभिव्यंजन भी किया है। अतः वे अनुसंधाता भी थे और विधाता भी। उन्होंने उत्तर भारत में फैली समाज और धर्म की घोर विषमता दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने धर्म के ऊपरी ढोंग को जनता के सामने निर्भीक वाणी में व्यक्त करके, पाखण्डों का खण्डन करके, उनकी आत्मा को जाग्रत किया था। आज भी आत्मा की तलाश के लिए कबीरवाणी सहायक सिद्ध हो सकती है।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानसपटल में उस अमूर्त–असीम सत्ता के प्रति जिज्ञासा की भावना रही है। और यह विश्वास रहा है कि कोई अज्ञात शक्ति इस जगत का नियमन और नियन्त्रण करती है। सृष्टि के अनन्त वैभव यथा सूर्य, चन्द्र तथा तारे आदि ज्योतिषमान ग्रहपिण्डों की नियमित गति व स्थिति को देखकर मानव के मन–मस्तिष्क में जिज्ञासा पैदा होती है, वह चिन्तन–मनन करने लगता है कि इस सृष्टि का स्रष्टा कौन है?वह कहां निवास करता है, चन्द्रमा में ऐसी कौन सी शक्ति निहित है जिससे वह प्रतिदिन नियमित रूप से अपने प्रकाश द्वारा समस्त संसार को आलोकित करता है?वह कौन है, क्या है, जिसके कारण शिशु के पैदा होते ही माता के स्तनों में दूध का संचार हो जाता है। जबकि कौमार्य अवस्था में ऐसा सम्भव नहीं होता। वह कहां छिपा है?उससे मानव का क्या और कैसा संबंध है, आदि–आदि न जाने कितने ही प्रश्न हैं, जिनके उत्तर खोजने का प्रयास मानव मेधा ने समय–समय पर भिन्न–भिन्न ढंग से किया है। और उसमें वह सफल भी हुआ है। फिर भी मानव की रहस्यपूर्ण जिज्ञासा शान्त नहीं हुई है?इन सभी प्रश्नों के समाधान के लिए वह अपने अंदर झांकने का प्रयास करता है और यहीं से प्रारम्भ होता है–आत्मा की तलाश का सफर। इस सफर में हम कबीरवाणी के माध्यम से पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आत्मा की तलाश के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। कबीर की वाणी हमारी आत्मा को सुप्तावस्था से चेतनता की ओर अग्रसर करती है।

समाज में निर्वहन के लिए हम अनेक मनुष्यों से सम्बन्ध बनाते हैं। अपने स्वार्थपूर्ति के लिए अनेक बुराइयों व अवगुणों में लिप्त हो जाते हैं। हम अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को भूल जाते हैं। इस बात को विस्मृत कर देते हैं कि परमात्मा ने हमारी आत्मा को मानव का चोला पहनाकर क्यों भेजा है?जिस मानव जीवन को कबीर आदि सन्तों ने 84 लाख योनियों में दुर्लभ और सर्वश्रेष्ठ बताया है। उसे हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद, इन पांच मनोविकारों के वशीभूत होकर व्यर्थ ही गंवा देते हैं। ये विकार समय–समय पर मानव को भ्रमित करते रहे हैं। मानव की दुर्बलता और मलिनता का कारण विकार ही है।

काम की कल्पना प्राचीन साहित्य में की गई है। पवित्र ग्रन्थ भगवद्गीता में लिखा गया है, कि ''जिस प्रकार धुएं से आग, मैल से शीशा और जेर से गर्भ ढका रहता है, उसी प्रकार काम से ज्ञान ढका होता है।'' काम जहां मनुष्य की अज्ञानता और आगमन का कारण बनता है, वहां मनुष्य के नैतिक स्तर को भी गिरा देता है। मध्ययुग में भी काम–भावना की प्रबलता के कारण समाज में बलात्कार, व्याभिचार आदि सभी बुराइयां जोर पकड़ रही थी। इसलिए कबीरदास जी ने भी काम का खण्डन करते हुए कहा था कि काम के वशीभूत होकर मनुष्य अपने हीरे जैसे मानव जीवन को नष्ट कर लेता है। ''भक्ति बिगाड़ी कामिया, इन्द्रिन केरे स्वाद'' अतः हमें अपनी कामेन्द्रियों को वश में रखना चाहिए। काम ऐसा विकार है जो सामान्यतः पूरे कुल के मान–सम्मान को नष्ट कर देता है। परन्तु यदि इस पर सूक्ष्म विचार किया जाए तो यह मन की कल्पना है कबीरदास जी मानव को आत्मिक रूप से जागृत करते हुए कहते हैं सभी व्यक्ति काम–काम करते रहते हैं लेकिन काम को कोई भी नहीं पहचानता, हमारे मन की कल्पना ही तो काम है। ''जेति मन की कल्पना, काम कहावै सोय।'' कबीर की वाणी हमें चिन्तन के लिए बाध्य करती है जिस काम–वासना के कारण मनुष्य सामाजिक स्तर पर गिर जाता है, आत्मिक रूप से मलिन हो जाता है। वह तो कुछ भी नहीं है। उनकी यह विचारधारा हमारे आत्मिक रूप को जागृत करती है।

क्रोध एक ऐसा मनोविकार है जो मनुष्य की बुद्धि को मन्द कर देता है और समस्त झगड़ों का मूल भी क्रोध ही है। क्रोध आश्रय और आलम्बन दोनों के लिए हानिकरक होता है। क्रोध के विषय में सिख परम्परा के प्रवर्तक गुरूनानक देव जी ने भी कहा था : कलह की अग्नि में सारा संसार जलता रहता है। क्रोध की अग्नि शारीरिक और मानसिक रूप से मानव को जला डालती है और इसका धुआं भी किसी को दृष्टिगोचर नहीं होता। क्रोध का परित्याग करके मनुष्य आत्मिक शांति प्राप्त कर सकता है।

कबीर मनुष्य में दुर्गुणों के विनाश और सद्गुणों की स्थापना पर बल देते हैं। जीवन के पवित्र आदर्श की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। वे कुसंगति काम निन्दा और क्रोध आदि के विषय में कहकर दुर्गुणों के विनाश के लिए प्रोत्साहित करते हैं। क्योंकि हर तरह से पवित्र हो जाने पर ब्रह्म स्वयं हृदय में दृष्टिगोचर होते हैं। उसे खोजने के लिए काशी या काबा जाने की आवश्यकता नहीं है। वह शांत मन से आत्म साक्षात्कार द्वारा संभव है। ''दिल ही खोजि दिल भीतरि इहां राम रहमाना।''

लोभ की गणना भी पंच–विकारों में की जाती है। मध्यकाल में राजा–प्रजा सभी लोभ लालच में फंसे हुए थे। इसके विषय में अलबरूनी का वर्णन बड़ा ध्यान देने योग्य हैः– ''सोना प्राप्ति के लिए अज्ञानी हिन्दू राजाओं के लोभ की कोई सीमा नहीं है। उनको जो कोई सोना बनाने की योजना बताए और उसमें उनके अनेक सुन्दर बच्चों को कत्ल करने की सलाह दे तो वह राक्षस ऐसे पाप से भी संकोच नहीं करेंगे। वह उनको आग में फैंक देंगे। '' निःसन्देह लोभ एक ऐसा विकार है जिसके फंदे में फंसकर मनुष्य किसी भी प्रकार का अनैतिक कर्म कर सकता है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह जितना प्राप्त कर लेता है सदैव उससे अधिक की कामना करता है और उसकी इस प्रवृति का कोई अन्त नहीं है। लोभी व्यक्ति दर–दर भटकता रहता है। कबीरदास जी के अनुसार लोभी व्यक्ति केवल लालच के विषय में ही सोचता है और हमें परमात्मा से विमुख कर देता है।

निःसन्देह कबीर इस स्थूल जगत के कवि नहीं है। शरीर या मस्तिष्क के कवि नहीं हैं। ज्ञान या संवेदना के नहीं, वह तो आत्मा के कवि हैं। संभवत इसलिए कबीर मनुष्य को मोह माया से दूर रहने की चेतावनी देते हैं। वे आत्मा और परमात्मा में भिन्नता तभी मानते हैं जब जीव मोह माया में लिप्त होकर अपना वास्तविक स्वरूप भूल बैठता है। जब जीव इन विकारों से रहित हो जाता है तब आत्मा और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं रह जाता। उनके अनुसार ईश्वर का जो रूप है वही जीव का है।

कबीर के लिए यह संसार कागज की पुड़िया है। समस्त सांसारिक उपादान छल–प्रपंच हैं। कनक और कामिनी सगे सम्बन्धी सब कुछ क्षण भंगुर और मिथ्या है। अंतिम सत्य है–आत्मा–परमात्मा का सम्बन्ध। जन सामान्य के लिए सुख–दुख का जो अर्थ है। कबीर की कविता उससे ऊपर उठकर आत्मा की मुक्ति

सुनीता बामल ,"आत्मा की तलाश के लिए कबीर वाणी "
Indian Streams Research Journal Vol-3, Issue-10 (Nov 2013): Online & Print

सुनीता बामल
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

का गुणगान करती है। उन्होंने संसार की नश्वरता और निस्सारता का वर्णन अत्यंत आवेग और गहन इन्द्रिय बोध के साथ किया है। कबीर हमारे अहंकार को, हमारे अस्तित्व के मिथ्या भ्रम को झकझोरते हैं। आंधी–तूफान का रूप लेकर हमारे अज्ञान को जड़ से उखाड़ते हैं। जीवन के प्रति हमारे लगाव को कबीर अत्यन्त तीखे स्वरों में व्यक्त करते हैं। समाज की बुराइयों, पाखंड और मिथ्या व्यवहार पर प्रहार करते हैं। कबीर की वाणी केवल एक व्यक्ति से नहीं, पूरे समाज से प्रश्नोतर करती है। उनके काव्य में बार–बार मृत्यु की आहट सुनाई देती हैं मानों वे हमें कहना चाहते हों कि हमें जीवन से, इस शरीर से अधिक मोह नहीं करना चाहिए। वह कहते हैं यह शरीर नश्वर है, आत्मा ही शाश्वत सत्य है। मृत्यु के पश्चात यह शरीर किसी काम नहीं आता। ''मानुष तेरा गुण बड़ा, मांसु न आवै काज।'' कहकर मानव के शरीरिक मोह पर तीखा प्रहार करते हैं। और आत्मा की तलाश के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनकी वाणी हमें बाध्य करती है कि हम अपनी सात्विक वृत्तियों को अपनाकर आत्मा को मलिन होने से बचाएं। वस्तुतः कबीर आदमी के भीतर चेतना का संश्लेषण चाहते हैं जिससे अनन्त उर्जा भीतर उपलब्ध हो जाए। वह उपलब्धि परमानन्द तक पहुंचा देती है।

कबीरदास आत्मा की मुक्ति और उल्लास के कवि हैं। इस संसार के साथ मानव मन के सम्बन्धों के कवि हैं। कहीं–कहीं पर हमें उनके काव्य में हमें अकेलेपन के दर्शन होते हैं। यह अकेला होना उनकी निजता है। मनुष्य जब अकेला होता है तो वह अपनी आत्मा के निकट होता है उस निजता और सूनेपन में उसे अवकाश मिलता है–आत्म चिन्तन का, आत्म साक्षात्कार का/अपने अकेलेपन में हम स्वयं को कबीर के निकट महसूस करते हैं। हमें यह अहसास होता है कि कबीर की वाणी हमें अपनी आत्मा के और अधिक निकट ला रही है। महान दार्शनिक ओशो रजनीश भी उनकी अकेलेपन की इस अवधारणा का समर्थन करते हुए प्रतीत होते है।

यहां कबीर बेहोशी को तोड़ना चाहते हैं, कहते हैं कि गाफिल हो कर सोने पर मति खो जाती है। मति ले भागते हैं चोर। यह मति है चेतना। बुद्ध जिसे अंतःस्थल का दीपक कहते हैं। बुद्ध कहते हैं कि घर में यदि दीपक जलता रहे, तो यों भी चोर नहीं घुसता, पर बेहोशी में तो चेतना भी सो जाती है। फिर आदमी के भीतर षटचक्रों की स्वर्ण–संपदा भी है। ये षटचक्र ऊर्जा की कुंजी हैं। ये छह चक्र जब ठीक–ठीक सक्रिय हो जाते हैं, तो जीवन में बड़ी ऊर्जा का आविर्भाव होता है। कुंडलिनी जाग्रत करने की चाभी मिल जाए, तो छहों चक्रों में ऊर्जा प्रवाहित होने लगती है। छह चक्रों की एक माला अनुस्यूत हो जाती है। कबीर कहते हैं कि यदि तुम जगते हो, तो ये पांचों इंद्रियां सो जाती हैं। ये पंच पहरेदार सो जाते हैं मानो और इनके सोते ही सारे संशय मिट जाते हैं, सारी यात्रा, आना–जाना, सारे भटकाव समाप्त हो जाते हैं, बस ब्रह्मज्ञान की प्रतीति होती है। रामरतन धन प्राप्त हो जाता है।

कबीर के अनुसार आत्मा की तलाश के लिए, परमात्मा की खोज के लिए तीर्थों पर जाने की आवश्यकता नहीं। मोक्ष प्राप्ति के लिए गंगा में स्नान करना भ्रममात्र है। यदि गंगा में स्नान करने से मुक्ति मिलती तो गंगा में रहने वाले जलचर आदि को कब की मुक्ति मिल गई होती। सत्य तो यह है कि जिस प्रकार कड़वी लौकी–अड़सठ तीर्थों में स्नान के पश्चात भी कड़वी ही बनी रहेगी। उसी प्रकार मन से मलिन लोग तीर्थयात्रा के बाद भी वैसे ही मलिन बने रहेंगे। यदि मनुष्य का मन पवित्र हो, हृदय शुद्ध हो और विचार सात्विक हो तो आत्मा–परमात्मा को तलाशना दुष्कर नहीं है। कबीर की निम्न पंक्तियों में उनकी वाणी का समस्त सार प्रतीत होता है, जिसके आधार पर हमारी आत्मा की तलाश निष्कर्ष प्राप्त कर लेती हैः–

''जल में कुंभ, कुंभ में जल, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहि समाना, यह तत् कथयों गियानी।''

संदर्भ सूची

1.भगवद्गीता गीता–3/38
2.पद्मेवकी नन्दन, कबीर, पृ. 89
3.गुरू अर्जुनदेव, आठ ग्रंथ, मठ। वार की माझ, पृ 142
4.अभिलाष दास, बीजक, पृ 111
5.डॉ. रामकुमार वर्मा, कबीर का रहस्यवाद, .पृ 22
6.फौजासिंह पंजाब दा इतिहास तीसरी सैंची (1000–1526 ए.डी.) सम्पादक पृ 299
7.राजकिशोर, कबीर की खोज, .पृ 92, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
8.गुरू वाणी में सामाजिक चेतना, उषा वोहरा–प्रकाशक निदेशक, भाषा विभाग, पटियाला, पंजाब।
9.कबीर–हजारी प्रसाद द्विवेदी।
10.कबीर ग्रन्थावली–श्याम सुंदर दास।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net